ग्रामोभ्युदयादेव देशोभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे | निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 25 अंकः 52 बुलेटिन अवधिः 05 – 09 नवम्बर 2016 दिनः शुक्रवार दिनाँकः 04 नवम्बर 2016

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **नैनीताल जिले के पर्वतीय क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – नैनीताल				
	05–11–2016	06–11–2016	07–11–2016	08–11–2016	09–11–2016
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	20	20	19	19	19
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	08	08	07	07	07
बादल आच्छादन	बादल	बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	85	80	80	80	80
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	45	40	40	40	40
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	04	04	06	08	04
वायु की दिशा	उत्तर–पूर्व	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

- रबी फसलों की बुवाई हेतु खेत तैयार करें।
- गेहूँ की जल्दी बोने वाली किस्मों की बुवाई करें।
- फसलों की बुवाई से पूर्व बीज उपचार अवष्य करें।
- गेहूँ के बीज का उपचार कार्बोक्सिन 2ग्राम/किग्रा से या टेबूकुनाजोल 1.5 ग्राम/किग्रा बीज की दर से करें।
- दलहनी फसलों हेतु थीरम 2 ग्राम + कार्बन्डाजीन 1 ग्राम/किग्रा बीज तथा तिलहनी फसलों में मैटालेक्जिल 6 ग्राम/किग्रा बीज की दर से उपचारित करें।
- जिन किसान भाईयों कि धान की फसल कट गई है उसकी मड़ाई करें।
- भण्डारण के लिए धान को काटकर अच्छी प्रकार सुखा लें ताकि उसमें नमी की मात्रा 12–14 प्रतिषत तक आ जाएं।

उद्यान प्रबन्धः

- टमाटर की पत्तियों पर भूरे धब्बे दिखाई पड़ने पर उनके प्रबंधन हेतु मैनकोजेब 2 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- सिंचित घाटी क्षेत्रों में अरकिल मटर की बुवाई हेतु खेत की तैयारी के साथ–साथ बीज उपलब्धता सुनिष्चित करें तथा 10–12 दिनों में बुवाई करें।

- ❖ एग्रीफॉउन्ड लाइट रेड प्याज की किस्म का बीज क्रय कर सिंचित घाटी क्षेत्रों में पौधषाला में बुवाई करें। यदि वी0एल0 3 प्याज का बीज उपलब्ध हो सके तो उसकी बुवाई भी पर्वतीय क्षेत्रों में करें। ध्यान रहे पौधषाला उस स्थान पर तैयार करें जहाँ पूर्व में प्याज की पौध तैयार न की गई हो। साथ ही साथ बीज को थायराम नामक रसायन से उपचारित करें। रसायन की 2.5 ग्राम मात्रा 1 किलोग्राम बीज उपचारण हेतु पर्याप्त है।
- ❖ पॉलीहाउस के भीतर व बाहर यदि सब्जी राई का प्रतिरोपण किया गया हो तथा पत्ते बिक्री हेतु तैयार हैं तो उन्हें बाजार में बेचें। तद्पष्चात् सिचांई करें । सिंचाई के 1–2 दिन पष्चात् जब भूमि में नमी हो तो सायंकाल में यूरिया की टॉप ड्रेसिंग हल्की मात्रा में करें।
- ❖ सिंचित घाटी क्षेत्रों में यदि राई की पौंध प्रतिरोपण हेतु तैयार है तो पॉलीहाउस या बाहर के वातावरण में उसका प्रतिरोपण 50ग40 से0मी0 फासलें पर करें।
- ❖ मटर को तना मक्खी के प्रकोप से बचाने के लिए कार्बोफ्यूरॉन 3 सी0जी0, 25 कि0ग्रा0 /है0 की दर से बुवाई के समय खाद व बीज के साथ जमीन में डालें।
- ❖ टमाटर में फल बेधक का प्रकोप होने पर, क्लोरान्ट्रानिलिप्रोले 18.5 एच0सी0, 150मि0ली0/है0 या इन्डोक्साकार्ज 14.5 एच0सी0, 500मि0ली0/है0 की दर से प्रयोग करें।
- ❖ टमाटर की फसल में सफेद मक्खी का प्रकोप होने पर सायान्ट्रानिलीप्रोले 10.26 ओ0डी0, 900 मि0ली0 /है0 या थियामेथोक्जाम 25 डब्लू0एस0जी0, 200 ग्राम /है0 की दर से प्रयोग करें।
- ❖ किसी भी कीटनाषी रसायन का एक बार से ज्यादा प्रयोग न करें।
- ❖ फ्रासबीन की फसल में पौधे सूखने की समस्या के समाधान हेतु कार्बन्डाजिन 1 ग्राम /लीटर पानी या ट्राईकोडर्मा 6–10 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर जड़ों की सिंचाई करें।

❖ सेब एवं अन्य गुठलीदार फल पौधों को आगामी षीतऋतु में रोपण हेतु लेआउट तथा गढ्ढों की खुदाई का काम प्रारंभ करें।

पशुपालन प्रबन्धः

- ❖ जिन पषुओं में एफ0एम0डी0 (मुखपका खुरपका) रोग के टीके नही लगें है उन पषुओं में तत्काल टीकाकरण करा लें। ताकि आपका पषुधन स्वस्थ रहे और उससे लगातार आपको सही उत्पादन प्राप्त होता रहें।
- ❖ खुरपका मुखपका के लक्षण– आँखें लाल होना, तेज बुखार होना (105–107°F), उत्पादन तथा आहार ग्रहण करने की क्षमता में कमी होना, मुहँ में छाले होना,लार गिरना समय से उपचार न मिलने की दषा में पषु के खुरों में घाँव बनना जिसकी वजह से पषुओं का लंगड़ाकर चलना आदि लक्षणों के आधार पर मुखपका खुरपका रोग की पहचान की जा सकती है। रोग के लक्षण पता चलते ही रोगी पषुओं को अन्य स्वस्थ पषुओं से तत्काल अलग कर दें। निकटतम पषु चिकित्सक की सलाह अनुसार उपचार करायें तथा स्वस्थ पषुओं को चारा देने के उपरांत ही अंत में पीड़ित पषुओं को मुलायम हरा चारा दें। तदुपरांत हाथों को लाल दवा से अच्छी तरह साफ करें।
- ❖ इस माह में जानवरों में खासकर भैसों में प्रसव दर अधिक बढ़ जाती है इसको ध्यान में रखते हुए पषुषाला को अच्छी तरह साफ–सुथरा, सूखा, रोषनीदार, हवादार होना चाहिए। इसके लिए नालियों में तथा आस–पास सूखे चूने का छिड़काव करें तथा जानवर के नीचे सूखा चारा बिछा दें। प्रसव के उपरांत स्वच्छता का पूरा ध्यान रखें। ठंड का समय आ गया है अतः ठंड से बचाव हेतु पषुपालक इसकी ओर ध्यान दें।
- ❖ भैंस के 1–4 माह के नवजात बच्चों की आहार नलिका में टाक्सोकैराविटूलूरम (केचुआँ/पटेरा) नामक परजीवी पाए जाते है। इसे पटेरा रोग भी कहते है। समय से उपचार न होने की दषा में लगभग 50 प्रतिषत से अधिक नवजात की मृत्यु इसी परजीवी के कारण होती है। इस रोग की पहचान – नवजात को बदबूदार दस्त होना और इसका रंग काली मिट्टी के समान होता है, कब्ज होना, पुनः बदबूदार दस्त होना व इसके साथ केचुआँ या पटेरा का होना, नवजात द्वारा मिट्टी खाना आदि लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान कर सकते है। रोग की पहचान होते ही पीपराजीन नामक औशधी का प्रयोग कर सकते हैं।
- ❖ पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन पष्चात् 10–15सी0सी0 नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन पष्चात् पुनः 10–15 सी0सी0 नीम का तेल पिला दें। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।
- ❖ नवजात पषु की नाल को नए ब्लेड से काटकर उसमें गांठ लगा दें तथा उस पर बीटाडीन या टिंचर लगाना न भूलें।
- ❖ पशुओं को हरा चारा में सूखा चारा अवश्य मिलाकर दें। अन्यथा आफरा (टिम्पेती) हो सकती है व पनीले दस्त हो सकते है, जिसकी वजह से उनकी मृत्यु हो सकती है।

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,